सनन्ध–इमाम रसूल की

खातिर प्यारी रूहें मोमिन, मैं कहूं अर्स सब्द।
बका सब्द कहे बिना, उड़े ना सरियत हद।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मैं अपने मोमिनों के लिए अर्श से वाणी लाया हूं। बिना अखण्ड वाणी के संसार के कर्मकाण्ड (शरीयत) नहीं मिटेंगे।

सुध दुनी हद ना बेहद, कौन रसूल कौन हम।
कागद ल्याया किनका, कहां सो अर्स खसम।। २ ।।

यहां पर दुनियां को क्षर और अक्षर की पहचान नहीं है। कौन रसूल है, कौन मैं हूं, रसूल साहब किनका पैगाम लाए हैं, खावंद और घर कहां हैं, की पहचान नहीं है।

ए सुध किन पाई नहीं, जो लिखी मांहें कागद।
ए सब खेलें ख्वाब में, कोई न छोड़े हद।। ३ ।।

यह ज्ञान जो कुरान में लिखा है किसी को नहीं मिला। यह सब संसार के जीव सपने में ही भटक रहे हैं। संसार छोड़कर कोई आगे की बात नहीं करता।

हद की बांधी सब दुनियां, हक तरफ न करे नजर।
पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवें खबर।। ४ ।।

यह सब दुनियां निराकार में बंधी है और हक की तरफ इनकी नजर ही नहीं जाती। अब हादी श्री प्राणनाथजी महाराज आए हैं, जो क्षर तथा अक्षर को छोड़कर पारब्रह्म अक्षरातीत की खबर देते हैं।

हाए हाए किनें न पेहेचानिया, ए जो रसूल रेहेमान।
कहे किताबें जाहेर, सब पर ए मेहेरबान।। ५ ।।

ऐसे दयालु (रहम वाले) श्री प्राणनाथजी को किसी ने पहचाना नहीं, जबकि सभी धर्म ग्रन्थों में साफ लिखा है कि श्री प्राणनाथजी सभी पर कृपा करने वाले हैं।

सब्द रसूल क्यों चीनहीं, ए जो चाम के दाम।
ख्वाबी दम क्यों समझहीं, ए जो अल्ला के कलाम।। ६ ।।

रसूल साहब की वाणी (कुरान) को दुनियां के जीव कैसे समझेंगे? क्योंकि कुरान में पारब्रह्म के वचन हैं और जीव तो सपने का है, इसलिए समझने का सवाल ही नहीं है।

जो दम होवें ख्वाब के, तिन क्यों उपजे विचार।
ए सब ढूंढ़ें ख्वाब में, माएने हवा नूर पार।। ७ ।।

जो सपने के जीव हैं उनके चित्त में कभी पार की बात आ ही नहीं सकती। यह सब जीव पारब्रह्म को सपने में ही ढूंढ़ते हैं, जबकि वह निराकार के पार अक्षर और अक्षर के पार परमधाम के हैं।

ए सांचा नूरी सांई का, इनके सब्द अगम।
फरिस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम।। ८ ।।

यह मुहम्मद साहब पारब्रह्म के सच्चे नूरी फरिश्ते हैं। इनकी वाणी भी पार की है, इसलिए आदमी हो या फरिश्ता, किसी के मुख से कुरान के भेद नहीं खुल सकते।

Nijanand App

आप रसूल नहीं हद का, इनों अर्स अजीम असल।
दुनी सुरिया उलंघ ना सके, पूरी हद की भी नहीं अकल।। ९ ।।

आप रसूल साहब इस संसार के नहीं हैं। इनका घर अर्श अजीम है। दुनियां वाले निराकार को पार नहीं कर सकते और निराकार के अन्दर की भी पूरी खबर इनको नहीं है।

ए सब्द पार बेहद के, ताके माएने करसी सोए।
सब्द महंमद जानें मेंहेदी, दूजा हद का न जाने कोए।। १० ।।

कुरान की वाणी बेहद के पार की है। इसके माएने इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी महाराज) जानते हैं। कोई दूसरा हद (क्षर ब्रह्माण्ड) में रहने वाला नहीं जानता।

हद बेहद दोऊ जुदे, मेंहेदी महंमद बिना न होए।
अब देखो जाहेर हुए, रह्या सब्द न हद का कोए।। ११ ।।

हद (क्षर) का ब्रह्माण्ड तथा बेहद (योगमाया) का ब्रह्माण्ड, अक्षर, अक्षरातीत को अलग-अलग ब्योरे वार मुहम्मद मेंहदी के बिना और कोई बता नहीं पाएगा। अब देखो, मुहम्मद जाहिर हो गए हैं और इसलिए संसार का ज्ञान अब नहीं चलेगा।

एही किताब बोहोतन पे, पर माएने न पाए किन।
अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन।। १२ ।।

यह कुरान बहुतों के पास है, पर किसी ने उसके अर्थ को नहीं समझा। अब सारे संसार में कुरान के रहस्यों का भी भेद फैलने लगा है।

जो दम होवें ख्वाब के, सो क्यों करसी पेहेचान।
चीन्ह्या नहीं रसूल को, किन हिंदू न मुसलमान।। १३ ।।

जो सपने के जीव हैं, वह कुरान की वाणी को कैसे समझेंगे? संसार के जीवों में से हिन्दू या मुसलमानों में से किसी ने रसूल साहब को नहीं पहचाना।

केतेक संग रसूल के, रेहेते रात दिन मांहें।
नातो ओ बुजरक हुते, पर कछू अली बिन चीन्ह्या नांहें।। १४ ।।

रसूल साहब के साथ में रात-दिन इनके दोस्त (अली, अबूबक्र, उमर, उसमान) रहते थे, यह ज्ञानी तो थे परन्तु उनके स्वरूप को केवल अली ही पहचान पाए।

तबक चौदे हद के, चौगिरद निराकार।
ए सब्द हदी क्यों समझहीं, जो निराकार के पार।। १५ ।।

चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड नाशवान है। इसके चारों तरफ निराकार का आवरण है, इसलिए निराकार के पार के शब्दों को हद के जीव कैसे समझ पाएंगे?

बेहद को सब्द न पोहोंचही, ए हद में करें विचार।
कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार।। १६ ।।

यहां चौदह लोकों का ज्ञान बेहद का वर्णन नहीं कर सकता और यहां के ज्ञानी हद (चौदह लोकों) के अन्दर ही पारब्रह्म को खोजते हैं, इसलिए वह निराकार तक ही कहते हैं।

Nijanand App

फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून।
क्या है सुन्य निरंजन, कछू खबर न दई इन।। १७ ।।

इन संसार के जीवों से पूछो कि बेचून, बेचगून (निराकार, निर्गुण) क्या है या शून्य-निरंजन क्या है? ऐसी कुछ भी खबर इनको नहीं है।

निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम।
ना सुध छल ना वतन ए बुजरकों बड़ी गम।। १८ ।।

परन्तु निराकार (संसार के जीव) की और आकार वाले (मोमिन) की इनको खबर नहीं है। इन्हें अपने आपकी और पारब्रह्म की खबर नहीं है। इनको न माया की खबर है और न घर की खबर है। यह यहां के ज्ञानियों का ज्ञान है।

खासा नूरी खुदाए का, ए बोल्या सब्दातीत।
सब मिल सब्द विचारहीं, पर पावें ना वे रीत।। १९ ।।

रसूल साहब खुदा के नूरी स्वरूप हैं और उन्होंने पार की वाणी बोली, जिसे संसार के लोग मिलकर विचारते हैं, पर उनके भेदों को नहीं पहचान पाते।

आदम मिलो कई औलिए, अंबिए बड़े आकीन।
नूरी कहावें फरिस्ते, पर किन रसूल को ना चीन।। २० ।।

संसार के आदमी, ज्ञानी, औलिए, अंबिए, यकीन वाले, नूरी फरिश्ते, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि भी रसूल साहब को नहीं पहचान सके।

सिफत बड़ी रसूल की, निराकार के पार अखंड।
ऐसा कोई न हुआ, ना तो हुए कई ब्रह्मांड।। २१ ।।

रसूल साहब की बड़ी महिमा है कि यह निराकार के पार अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं। कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट गए पर इनके समान अभी तक दूसरा कोई नहीं हुआ।

दीन दरसन फिरके मजहब, और मिलो कई जात।
पढ़ पढ़ सिर बांधे पर, पर पाई ना नबी की बात।। २२ ।।

दुनियां के सभी धर्म शास्त्र, सम्प्रदाय तथा और भी अन्य लोगों ने अध्ययन कर उपाधियां ले लीं। पर किसी ने रसूल साहब के ज्ञान को नहीं पाया।

चौदे तबक की रूह में, ऐसा ना कोई समर्थ।
सब्द महंमद मेंहेदी बिना, करे सो कौन अर्थ।। २३ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई नहीं हुआ जो कुरान की वाणी को समझ सके। इन शब्दों के रहस्य को मुहम्मद मेंहदी के बिना और कोई नहीं खोल सकता।

ए माएने इमाम बिना, कोई कर ना सके और।
अब देखोगे इन माएनों, सुख लेसी सब ठौर।। २४ ।।

इमाम मेंहदी के बिना इस कुरान के माएने कोई नहीं खोल सका था जो उन्होंने अब खोल दिए हैं अब सभी लोग उसका सुख लेंगे।

Nijanand App

नूर बड़ा इन सब्द में, सो देख थके सब कोए।
इमाम बिना इन नूर को, रोसन क्यों कर होए।। २५ ।।

कुरान के शब्दों में नूरी ज्ञान (अखण्ड ज्ञान) भरा है। जिसे देख, पढ़कर सब लोग थक गए थे, पर इमाम मेंहदी के बिना इस ज्ञान के रहस्य को दूसरा कैसे जाहिर कर सकता था।

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मुसाफ मगज नूर।
कुफर चौदे तबक का, किया इमामें दूर।। २६ ।।

संसार की जबान से कुरान के भेदों का प्रकाश कैसे करूं? चौदह तबकों (लोकों) के जीवों का अन्धकार अब इमाम साहब ने आकर दूर कर दिया है।

फुरमान नूर के पार का, सो क्यों कर इनों समझाए।
ए माएने रोसन तब होवहीं, जब बैठे इमाम इत आए।। २७ ।।

यह कुरान नूर के पार परमधाम का ज्ञान देता है। वह इन संसार के जीवों की समझ में कैसे आए? इसके भेद तो तब खुलेंगे जब इमाम मेंहदी यहां आकर बैठ जाएंगे।

ल्याए खजाना वतनी, करसी आए इंसाफ।
देसी सुख कायम, आवसी सो असराफ।। २८ ।।

कुरान में लिखा था कि इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी महाराज) तारतम वाणी लेकर आएंगे और संसार का न्याय करके सबको बहिश्तों में कायम करेंगे। ऐसा सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश आएगा।

ए रसूलें पेहेले कह्या, खोलसी माएने इमाम।
उमेदां मोमिन दुनी की, होसी जाहेर हुए कलाम।। २९ ।।

रसूल साहब ने पहले ही कह दिया था कि इस कुरान के माएने इमाम मेंहदी आकर खोलेंगे और सब दुनियां की चाहनाएं इन वचनों के जाहिर होने से पूरी होंगी।

मोमिन कारन आवसी, आखिर करी सरत।
हम भी फेर तब आवसी, सुख देसी कर सिफायत।। ३० ।।

रसूल साहब ने वायदा कर रखा है कि जब इमाम मेंहदी मोमिनों के वास्ते आएंगे तो मैं भी उनके साथ में आऊंगा और अपनी जमात की सिफायत (सिफारिश) करके सुख दूंगा।

जो सुख देसी इमाम, सो या जुबां कह्यो न जाए।
उमेदां मोमिन की, पूरी ईसा इमामें आए।। ३१ ।।

इमाम मेंहदी आकर जो सुख देंगे वह इस जबान से वर्णन करने में नहीं आते हैं, ऐसा कुरान में लिखा है। अब ईसा और इमाम मेंहदी ने आकर के मोमिनों की सब इच्छाओं को पूरा कर दिया।

नूर बड़ो इन माएनों, सो अब हुआ रोसन।
तबक चौदे गरजिया, बरस्या नूर वतन।। ३२ ।।

तारतम वाणी के ज्ञान से कुरान के सारे भेद खुल गए और अब उसका तेज चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में फैला। परमधाम का ज्ञान (तारतम वाणी) सब जगह फैला।

कह्या जो इमाम आवसी, सो सरत हुई सत।
आगे इन इमाम के, जाहेर होसी बड़ी मत।। ३३ ।।

मुहम्मद साहब ने जो इमाम मेंहदी के आने के लिए कहा वह वायदा सत्य हो गया। अब इन इमाम साहब की जागृत बुद्धि का प्रकाश फैलेगा।

Nijanand App

एक लुगा झूठ ना होवहीं, जो बोले हजरत।
आगे ही थें सब कह्या, पर क्यों समझे रूह गफलत।। ३४ ।।

हजरत रसूल साहब ने जो पहले से कह रखा है उसका एक शब्द भी झूठा नहीं होगा। उन्होंने आगे आने वाली सब बातों को पहले से ही बतला दिया था, परन्तु माया के गफलती जीवों को समझ में कैसे आए?

अब सो इमाम आइया, याही दिन आखिर।
सब्द रसूल के जाहेर, फिरवलसी सब पर।। ३५ ।।

रसूल साहब ने आखिरत में आने के लिए जिसके वास्ते कहा था, वही इमाम मेंहदी आ गए हैं और इसलिए सभी लोग रसूल की बातों पर भरोसा करेंगे।

पैंडा बताया रसूलें, पर कोई न समझया तब।
तिन राह सब चलसी, राजी हो हो अब।। ३६ ।।

रसूल साहब ने पार का रास्ता बतलाया था, परन्तु तब कोई नहीं समझ सका था। अब सब राजी खुशी इसी रास्ते पर चलेंगे।

धंन रसूल धंन फुरमान, धंन आया जिन खातिर।
धंन मेंहेदी महंमद रूहअल्ला, धंन धंन ए आखिर।। ३७ ।।

रसूल साहब, जिनके लिए कुरान लाए हैं, वह, रूह अल्लाह तथा इमाम मेंहदी धन्य हैं। यह आखिरत का समय भी धन्य है।

अब सब में जाहेर हुए, बड़े रसूल के सब्द।
इमाम आए फजर हुई, उड़ गई अंधेरी हद।। ३८ ।।

अब इमाम मेंहदी के आने से ज्ञान का सवेरा हो गया और अज्ञानता का अन्धकार मिट गया। अब सारे जगत में रसूल साहब के कुरान की वाणी जाहिर हो गई।

एते दिन ढांपे हते, मगज माएने बातन।
आए इमाम बखत बदल्या, सैतान मारया सबन।। ३९ ।।

आज तक कुरान के बातूनी भेद छिपे थे। अब इमाम साहब के आने से समय बदल गया और सबकी कुबुद्धि हट गई।

जाहेर साहेब हुए पीछे, चले न दूजी बाट।
पंथ पैंडे मजहब सब उड़ गए, सब हुआ एकै ठाट।। ४० ।।

इमाम मेंहदी के जाहिर होने के बाद दूसरे सभी धर्मों के रास्ते बन्द हो गए तथा सभी पन्थ, पैंडे, मजहब समाप्त हो गए। सबका एक रास्ता हो गया।

आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद।
महंमद मेंहेदी आए बिना, कौन मिटावे वाद।। ४१ ।।

सारे जगत के मालिक श्री प्राणनाथजी आए हैं, जो सब धर्म शास्त्रों के ज्ञाता हैं। इमाम मेंहदी के आए बिना इन सब झगड़ों को कौन मिटा सकता था?

Nijanand App

घर घर होसी सादियां, उड़ गई गफलत।
जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखिरत।। ४२ ।।

घर-घर में अब बड़ी खुशियां मनाई जाएंगी। सबकी अज्ञानता मिट गई। जो मुहम्मद साहब ने आखिरत के लिए पहले कहा था, वह सब पूरा हुआ।

तारीफ महंमद मेहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें।
कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडो नांहें।। ४३ ।।

आज दिन तक कई ब्रह्माण्ड हो गए, पर किसी ब्रह्माण्ड में इमाम मेंहदी की शोभा (प्रशंसा) हुई है, ऐसी कहीं भी किसी ब्रह्माण्ड में नहीं सुना।

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ १०५२ ॥

सनन्ध–दज्जाल की

जिन मोमिन के कारने, रचिया एह मंडल।
तिनकी उमेदां पूरने, मेंहेदी महंमद आए मिल।। १ ।।

जिन मोमिनों के लिए यह ब्रह्माण्ड बनाया गया है, उनकी चाहना पूरी करने के लिए ही मेंहदी मुहम्मद यहां आए हैं।

अब नेक कहूं आखिर की, जो होसी सब जाहेर।
बांधे दज्जालें मोमिन, अंतर मांहें बाहेर।। २ ।।

अब थोड़ी-सी बात आखिरत के समय की बताती हूं जो सब में जाहिर होगी। दज्जाल ने मोमिनों को अन्दर (अबलीस), बाहर और अंतर (अजाजील) से बांध रखा है।

आया इमाम आलम का, तब कुफर रेहेवे कित।
पर कहूं मोमिन दज्जाल की, नेक हुई लड़ाई इत।। ३ ।।

सारे संसार के मालिक आएं हैं, तब इनके सामने कुफ्र कैसे रह सकता है? मोमिनों और दज्जाल की जो लड़ाई हुई है उसकी थोड़ी-सी हकीकत बताती हूं।

क्यों कहूं बल दज्जाल का, जाहेर बड़ा पलीत।
जोर न चले काहू का, लिए जो सारे जीत।। ४ ।।

दज्जाल की ताकत का कहां तक वर्णन करूं? यह बड़ा नीच है। इसने सारे जगत को जीत रखा है, किसी का कोई बल नहीं चलता।

अंग जो बांधे या बिध, पेहेले पेड़ से फिराई बुध।
उलटाए सबों या बिध, परी न काहूं सुध।। ५ ।।

इसने अंग-अंग में तरह-तरह के बन्धन बांध रखे हैं। शुरू से ही (जड़ से ही) बुद्धि को बांध रखा है। इसने सभी को उलटा कर उलटे रास्ते लगा दिया है। इसकी सुध किसी को नहीं है।

दज्जाल नजरों न आवहीं, सब में किया दखल।
जाने दोस्त को दुस्मन, कोई ऐसी फिराई कल।। ६ ।।

दज्जाल नजर से दिखाई नहीं देता पर सबके अन्दर यह बैठा है। जिससे दोस्त दुश्मन की तरह दिखाई पड़ते हैं। बुद्धि को इसने ऐसा उलटा रखा है।

Nijanand App